ISBN - 978-93-5506-216-3

15. पत्रकारिता : रिपोर्टर 85
- *आशा राठौर*

16. पत्रकारिता : रिपोर्टिंग 92
- *प्रा. माधुरी राजीव क्षीरसागर*

17. समाचार लेखन 98
- *डॉ. रेवा प्रसाद*

18. समाचार के प्रकार 104
- *डॉ. प्रवीण बाला*

19. समाचार : संपादन कला 111
- *डॉ. मारोती यमुलवाड*

20. समाचार समितियाँ 118
- *डॉ. मोहनिका गजभिये*

21. ई-पत्रकारिता 124
- *प्रा. पांडुरंग एन. कामत*

22. विज्ञापन पत्रकारिता 129
- *डॉ. वै.उमा*

23. टेलीविजन पत्रकारिता 136
- *डॉ. श्रद्धा तिवारी*

24. रेडियो पत्रकारिता 142
- *डॉ. बिक्रम कुमार साव*

25. वेब पत्रकारिता 149
- *जिष्णा राघव*

26. पत्रकारिता और साक्षात्कार 156
- *डॉ. तेजिंदर कौर*

27. पत्रकारिता : फीचर लेखन 162
- *रोहिणी रामचंद सालवे*

28. पत्रकारिता और अनुवाद 167
- *विजय एम. राठोड*

29. हिंदी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ 172
- *डॉ. ममता नानकचंद पंजाबी*

30. हिंदी के प्रमुख पत्रकार 178
- *डॉ. लूनेश कुमार वर्मा*

31. हिंदी पत्रकारिता : समाज सुधार आंदोलन 185
- *जयवीर सिंह*

32. राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता 190
- *नितेश एस. पाटील*

33. पत्रकारिता और सरकारी संचार माध्यम 196
- *डॉ. फतेह सिंह*

34. पत्रकारिता की नैतिकता पर सवाल 202
- *डॉ. देविदास भिमराव जाधव*

35. पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं 208
- *डॉ. ललित चंद्र जोशी*

17. समाचार लेखन

- डॉ. रेवा प्रसाद

मनुष्य एक सामाजिक और जिज्ञासु प्राणी है। वह जिस समाज या वातावरण में रहता है उसके बारे में जानने की इच्छा रखता है। आसपास घट रही घटनाओं से एक प्रकार का संतोष, आनंद और ज्ञान की प्राप्ति करता है और इसी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण आज वह सृष्टि का सबसे विकसित प्राणी बन गया है। प्राचीन समय से ही मनुष्य ने सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए संदेशवाहक के रूप में धावक, घुड़सवारों, पक्षियों, रोशनी, ध्वजा आदि की मदद लेने जैसी विधियों, तरीकों एवं माध्यमों को खोजा और विकसित किया। पत्र के जरिए समाचार प्राप्त करना एक पुराना माध्यम है, जो लिपि और डाक व्यवस्था के विकसित होने के बाद अस्तित्व में आया और आज भी प्रयोग में लाया जाता है। इसी प्रकार समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन एवं इंटरनेट समाचार प्राप्ति के आधुनिकतम संचार माध्यम है, जो छपाई, रेडियो एवं टेलीविजन जैसे वैज्ञानिक खोजों के बाद अस्तित्व में आए हैं।

समाचार का अर्थ :-

सम्यक आचरण के अनुरूप निष्पक्ष भाव से तथ्यों की प्रस्तुति ही समाचार है। हिंदी में 'समाचार' शब्द का प्रचलन अंग्रेजी शब्द न्यूज के पर्याय के रूप में हुआ। समाचार के लिए सूचना, संवाद, वृत्तान्त, संदेश आदि शब्द पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उर्दू में समाचार के लिए 'खबर' शब्द का प्रयोग हुआ है।

समाचार की परिभाषा :-

समाचार की परिभाषा निम्नांकित विद्वानों ने प्रस्तुत की है-

i. **रामचंद्र वर्मा** - "ऐसी ताजा या हाल की घटना की सूचना जिसके संबंध में लोगों को जानकारी न हो समाचार है।"

ii. **विलियम रिवर्स** - "घटनाओं, तथ्यों और विचारों की सामयिक रिपोर्ट समाचार है, जिसमें पर्याप्त लोगों की रुचि हो।"

iii. **स्पेंसर रिवर्स** - "वह सब घटना या विचार जिसमें बहुसंख्यक पाठकों की दिलचस्पी हो, समाचार है।"

उपरोक्त कही गई बातों से यह स्पष्ट होता है कि हर वह सामयिक सूचना, वृत्तांत, घटना, तथ्य, विचार अथवा संगठित बात समाचार है जिसमें नवीनता एवं विलक्षणता हो, जिसमें नई जानकारी मिलती हो एवं जिसमें अधिकतम लोगों की अधिकतम रूचि हो, जिसमें हृदय स्पर्शी क्षमता हो और जिसमें परिवर्तन की सूचना मिलती हो।

विभिन्न समाचारों के माध्यम से दुनिया भर के समाचार हमारे पास पहुँचते हैं, चाहे वो समाचार पत्र हो, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट या सोशल मीडिया हो। देश दुनिया में घटने वाली विभिन्न घटनाओं को समाचार संगठनों में काम करने वाले पत्रकार हम तक पहुँचाते हैं। इसके लिए वह रोज सूचनाओं का संकलन करते हैं अर्थात व्यक्ति को, समाज को, देश एवं दुनिया को प्रभावित करने वाली हर सूचना समाचार है। 'समाचार लेखन' का उद्देश्य कम से कम शब्दों में विविध विषयों, क्षेत्रों, स्थानों की सूचनाओं और गतिविधियों को प्रभावशाली ढंग से पाठकों तक पहुँचाना है।

समाचार लेखन के तत्व :-

समाचार के मूल में सूचनाएँ होती हैं। यह सूचनाएँ समसामयिक घटनाओं की होती हैं। पत्रकार उन घटित घटनाओं को एकत्रित कर समाचार के प्रारूप में ढालकर पाठकों की जिज्ञासा को पूर्ति करने लायक बनाता है। पाठकों की जिज्ञासा हमेशा ही कौन, क्या, कब, कहां, क्यों और कैसे प्रश्नों के उत्तर समाचार पत्रों में खोजने का प्रयास करती है। परंतु इन सभी प्रश्नों का उत्तर समाचार पत्र लेखन करते हुए तलाशना व उसके संपूर्ण अर्थ सहित पाठकों तक पहुँचाना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

समाचार के अर्थ में समाचार के स्वरूप पर दृष्टिपात करते हुए उसके प्रमुख तत्वों को आसानी से समझा जा सकता है। शुष्क तथ्यों से समाचार नहीं बन सकते परंतु वह विचार जो आम मनुष्य के जीवन पर प्रभाव डालते हैं उसे रुचिकर लगते हैं, आंदोलित करते हैं, वे ही समाचार बनते हैं। समाचार की इस आवश्यकता को

ध्यान में रखते हुए समाचार में छह तत्वों का समावेश आवश्यक माना जाता है। वे हैं- क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों और कैसे।

अंग्रेजी में इन्हें पाँच 'डब्ल्यू' - हू, व्हाट, व्हेन, व्हाई, वेयर और एक 'एच' हाउ कहा जाता है। इन छह सवालों के माध्यम से सभी प्रश्नों के उत्तर किसी भी घटना के हर पहलू को स्पष्ट करते हैं लेकिन समाचार लिखते समय सभी प्रश्नों के उत्तर तलाशना और उसके सम्पूर्ण अर्थ में पाठकों तक पहुँचाना अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है।

1. क्या- 'क्या हुआ' जिसके संबंध में समाचार लिखा जा रहा है।
2. कहाँ- 'समाचार' में दी गई घटना का संबंध किस स्थान, नगर, गाँव, प्रदेश या देश से है।
3. कब- 'समाचार' किस समय, किस दिन, किस अवसर का है।
4. कौन- 'समाचार' के विषय (घटना, वृतांत आदि) से कौन लोग संबंधित है।
5. क्यों- 'समाचार' की पृष्ठभूमि।
6. कैसे- 'समाचार' का पूरा ब्योरा।

यह छह 'क' कार ('क' अक्षर से शुरू होनेवाले छह प्रश्न) समाचार की आत्मा है। समाचार में इन तत्वों का समावेश अनिवार्य है।

समाचार के कुछ प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं

1. **सामयिकता** - किसी भी समाचार या खबर के नए होने के साथ ही उसका सही समय पर जन सामान्य तक पहुँचाना जरूरी है।
2. **स्थानीयता/ निकटता** - अधिकतर पाठक वर्ग अपने आस-पास के गाँव, कस्बे या देश की खबरों में रूचि रखता है और जो खबरें उस पर प्रत्यक्ष तौर पर प्रभाव डालती है उसमें वह ज्यादा रूचि लेता है।
3. **वैशिष्टय** - लोग विशेष व्यक्तियों के साथ घटित होने वाली घटनाओं में अधिक रूचि लेते हैं जिससे ये घटनाएँ समाचार का अहम हिस्सा बन जाती हैं।
4. **विवाद, हिंसा अथवा संघर्ष** - जब कभी कहीं किसी गली मुहल्ले अथवा विभिन्न सम्प्रदायों में विवाद होता है, तो जन सामान्य स्वयं ही विवादों में जुड़ जाता है और सभी प्रकार के विवाद, हिंसा या संघर्ष खबर बन जाते हैं।

5. **सरकारी एवं राजनैतिक गतिविधियाँ** - सरकारी गजट, कानून, बिल, एक्ट आदि भी अच्छी खबर बनते है क्योंकि जन जीवन इन खबरों से अपने हानि लाभ के लिए प्रभावित होता है।
6. **विकासशील परियोजनाएँ एवं मुद्दे** - किसी भी महामारी की रोक के लिए कारगर दवा की खोज व विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे अन्वेषण का समाचार जिससे समाज या किसी समुदाय की जीवन शैली में बदलाव आए तो वह भी समाचार का महत्वपूर्ण तत्व है।
7. **मानवीय अभिरुचि** - पाठक साहस, शौर्य, हास्य, विजय, मनोरंजन, कौतूहल अथवा जिज्ञासा से भरपूर घटनाओं व मानव हित से भरे समाचारों को पढना पसंद करते है। ये भी महत्वपूर्ण समाचारों के अंतर्गत आते है।
8. **मौसम एवं खेल** - मानसून की पूर्व सूचना एवं खेल आदि भी समाचार के महत्वपूर्ण तत्व है।
9. **प्रतिक्रियात्मकता** - किसी भी घटना का समाचार बनना और फिर उसकी ताजगी बनाए रखना भी समाचार को विशेष बनाता है।

समाचार लेखन की प्रक्रिया

समाचार लेखन की प्रक्रिया में उलटा पिरामिड सिद्धांत समाचार लेखन का बुनियादी सिद्धांत है। समाचार लेखन का सबसे सरल, उपयोगी और व्यावहारिक सिद्धांत उलटा पिरामिड सिद्धांत है। समाचार लेखन का यह सिद्धांत कथा या कहानी लेखन की प्रक्रिया के बिलकुल उलट है। इस सिद्धांत में किसी घटना, विचार या समस्या के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या जानकारी को सबसे पहले बताया जाता है जबकि कहानी या उपन्यास में सबसे अंत में क्लाइमेक्स आता है। इसे उलटा पिरामिड इसलिए कहते है क्योंकि इसमें महत्वपूर्ण सूचना सबसे पहले आती है जबकि पिरामिड के निचले हिस्से में महत्वपूर्ण सूचना होती है। इस शैली में पिरामिड को उलटा कर दिया जाता है और सबसे महत्वपूर्ण सूचना पिरामिड के सबसे उपरी हिस्से में होती है और घटते क्रम में कम महत्व की सूचनाएँ निचले हिस्से में होती है। इसकी शैली के तहत लिखे गए समाचार को सुविधा की दृष्टि से तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है- मुखड़ा या इंट्रो या लीड, बॉडी और निष्कर्ष या समापन। समाचार के पहले या दूसरे पैराग्राफ को मुखड़ा या इंट्रो कहा जाता है। मुखड़ा किसी भी समाचार का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है क्योंकि इसमें

महत्वपूर्ण सूचनाओ को लिखा जाता है। इसके बाद बॉडी आती है, जिसमे महत्व के अनुसार घटते हुए क्रम में सूचना देने के अलावा उसकी पृष्ठभूमि का भी जिक्र किया जाता है और सबसे अंत मे निष्कर्ष या समापन आता है।

समाचार को सुविधा की दृष्टि से तीन भागो में विभाजित कर सकते है

1. **मुखड़ा या इंट्रो या लीड** – उलटा पिरामिड शैली में समाचार लेखन का सबसे मे महत्वपूर्ण पहलू उसका मुखडा या लीड लेखन है। मुखड़ा समाचार का पहला पैराग्राफ होता है, जहां से समाचार शुरू होता है। मुखड़े के आधार पर समाचार की गुणवत्ता निर्धारित की जाती है।

एक आदर्श मुखड़े में समाचार की महत्वपूर्ण सूचना आ जानी चाहिए। किसी भी मुखड़े में छह सवाल के जवाब देने की कोशिश की जाती है- क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, क्यों और कैसे हुआ। यह माना जाता है कि एक आदर्श मुखड़े में सभी छह 'क' कार का जवाब देने के बजाये किसी एक मुखड़े को प्राथमिकता देनी चाहिए।

2. **बॉडी**- समाचार लेखन के उलटा पिरामिड लेखन शैली में मुखड़े में उल्लिखित तथ्यो की व्याख्या और विश्लेषण समाचार की बॉडी मे होती है। समाचार लेखन का आदर्श नियम यह है कि किसी भी समाचार को ऐसे लिखा जाना चाहिए की अगर वह किसी बिंदु पर समाप्त हो जाता है तो उसके बाद के पैराग्राफ में ऐसा कोई तथ्य नहीं रहना चाहिए जो उस समाचार से ज्यादा महत्वपूर्ण हो। समाचार को अपने किसी भी समापन बिंदु पर पठनीय और प्रभावशाली होना चाहिए। कोई भी घटना कैसे और क्यों हुई, यह जानने के लिए उसकी पृष्ठभूमि और उसके व्यापक संदर्भ को खंगालने का प्रयास किया जाता है। जिसके माध्यम से किसी भी समाचार के वास्तविक अर्थ को स्पष्ट किया जा सकता है।

3. **निष्कर्ष या समापन**- समाचार के समापन के तहत यह ध्यान रखना चाहिए कि न केवल समाचार के प्रमुख तथ्य आए बल्कि समाचार के मुखड़े और समापन के बीच एक तारतम्यता भी हो। समाचार में तथ्यों को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए की उससे पाठक को किसी निर्णय या निष्कर्ष पर पहुँचने में मदद मिले।

भाषा शैली

समाचार लेखन के लिए जहां पत्रकार को समाचार लेखन की और संपादन की जानकारी होनी चाहिए वहीं इस जानकारी को पाठकों तक पहुंचाने के लिए भाषा की जानकारी होना भी अनिवार्य है। आमतौर पर लोग समाचारों को पढ़ते है, जिसके लिए समाचारों की भाषा बोलचाल की होनी चाहिए। भाषा सरल, छोटे वाक्य और संक्षिप्त पैराग्राफ। पत्रकार को इसका ध्यान रखना चाहिए कि भले ही समाचार के पाठक लाखों हों लेकिन वास्तविक रूप से एक अकेला व्यक्ति ही समाचार का उपयोग करेगा। इसलिए पत्रकार को इस पाठक या उपभोक्ता की भाषा, मूल्य, संस्कृति, ज्ञान और जानकारी का स्तर आदि के बारे में भी मालूम होना चाहिए। पत्रकार को अपने पाठक समुदाय की जानकारी होनी चाहिए क्योंकि समाचार की भाषा का हर शब्द पाठकों के लिए ही लिखा जा रहा है और समाचार लिखने वाले को पता होना चाहिए कि जिस भाषा का इस्तेमाल कर रहा है वह उससे कितना वाकिफ है।

निष्कर्ष :-

आज की दुनिया मे पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत ही व्यापक हो गया है। शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिस पर कोई समाचार न बना हो। बदलती दुनिया, बदलते सामाजिक परिदृश्य, बदलते बाजार, बाजार के आधार पर बदलते शैक्षिक सांस्कृतिक परिवेश और सूचनाओं के भंडार ने समाचार में विविधता ला दी है। इन नए समाचार बाजारों ने उत्पाद का रूप ले लिया है। समाचार की दुनिया दिनोंदिन विकसित एवं विस्तृत हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. डॉ. यू. सी. गुप्ता, सम्पादन कला, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, प्र.स. 2009
2. डॉ. विशाला शर्मा, प्रयोजनमूलक हिंदी, रोशनी पब्लिकेशन्स कानपुर, प्र.सं. 2014 —
3. डॉ. यू. सी. गुप्ता, हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, प्र.स. 2009